IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामानन्द का समाज के प्रति दृष्टिकोण

डॉ. पूजा जोरासिया
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
राजकीय कन्या महाविद्यालय केलवाड़ा बारां

जब समाज सभी तरह से राजनीतिक दृष्टि से बदल रहा था जनता मुस्लिम शासकों की नीति का शिकार हो रही थी व दलित वर्गों को सरलता से प्रलोभन दिया जा सकता था। अतः रामानन्द जी का प्रमुख उद्देश्य था समाज को संगठित कर दृढ़ करना तथा उसकी रक्षा करना था। इसलिए इस्लाम के प्रचार को रोकने के लिए हिन्दू समाज को जनवादी बनाना आवश्यक हो गया था। इसके लिए समाज को बाहर निकालना आवश्यक हो गया था।

यह समाज दो चरणों में विकसित हुआ था। **प्रथम चरण** दक्षिण भारत में था जो इस्लाम के आमगम के पूर्व था। **दूसरा चरण** उत्तर भारत में भागवत धर्म का प्रसार मुसलमानों के आगमन के पूर्व था लेकिन **तेरहवीं** शताब्दी में इस्लाम के उत्तर में आ जाने से स्थिति में परिवर्तन हो गया। मुस्लिम शासकों के संकीर्ण धार्मिक दृष्टिकोण के कारण हिन्दू समाज के लिए अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया। मुस्लिम शासकों ने हिन्दू प्रजा को अपनी प्रजा स्वीकार नहीं किया।

अतः **रामानन्द** जी में मनुष्य मात्र की समानता के लिए **समानता** का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।
इन्होंने समाज में व्याप्त **संस्कृत् भाषा** की जगह **हिन्दी** भाषा में अपने विचार व्यक्त किये।

राजनीतिक दृष्टि से रामानन्द के विचार – **14वीं** शताब्दी का भक्ति आन्दोलन मूल भक्ति आंदोलन से भिन्न था। क्योंकि इसमें जो समानता की बातें कही गई है वे इस्लाम के प्रभाव के कारण ही थी। रामानन्द जी ने इस्लाम के प्रभाव के पक्ष में तीन तर्क दिए –

(1) उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन का उन पर प्रभाव पड़ा होगा। तथा रामानन्द को इस्लामी विचारों से प्रेरणा मिली होगी।

(2) इस्लाम के एकेश्वरवाद तथा मनुष्य की समानता के सिद्धान्तों का उन पर प्रभाव पड़ा होगा।

(3) इस्लाम का आगमन एक चुनौती के रूप में हुआ।

अतः रामानन्द जी ने समाज की राजनीतिक स्थिति को गहराई से समझा व इस्लामी शक्तियों से प्रेरणा लें भक्ति को उसके विपक्ष में हथियार बना समाज को उनसे मुक्त करने का उत्थान प्रारम्भ किया। अतः भक्ति आंदोलन की आत्मा भारतीय थी जिसका स्वरूप व्यापक था।

रामभक्ति द्वारा राजनीतिक परिस्थितियों से मुक्ति – सल्तनत काल सैनिक संघर्ष के साथ–साथ धार्मिक संघर्ष का काल भी थी। इस संघर्ष का कारण तुर्क मुस्लिम आक्रमणकारी थे जो सैनिक विजय के साथ धार्मिक विजय भी चाहते थे। इनका उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना था तथा भारत को **दारूल** इस्लाम बनाना था। इन सब से उभरने के लिए भक्ति आन्दोलन हुआ जो दक्षिण से उत्तर तक चला। जो कि मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। इसका उद्देश्य एक ओर निराश हिन्दुओं में आशा का संचार करना इन्हें सामाजिक तथा धार्मिक आस्था प्रदान करना तथा दूसरी ओर, उस सामान्य भूमि की खोज करना था जिसमें हिन्दू धर्म व समाज तथा मुस्लिम समाज व धर्म में सहयोग तथा सद्भावना की स्थापना हो सके। भक्ति आन्दोलन ने एक सीमा तक इसको पूरा किया।

धर्म मनुष्य के जीवन का आवश्यक अंग है और आध्यात्मिक खोज मनुष्य की शाश्वत आकांक्षा है। ब्रह्मा तथा आत्मा का अस्तित्व, मोक्ष प्राप्त करने की महती आकांक्षा तथा सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयत्न मनुष्य ने आदिकाल से ही किया है। यह आध्यात्मिक खोज निरन्तर रही और मध्यकाल में आवश्यक रूप से उभरकर सामने आई इसको आश्रय प्रमुख संतों द्वारा दिया गया जिनमें रामानन्द जी भी शामिल थे। इन्होंने समाज को रामभक्ति की तरह मोड़ने का प्रयत्न किया। मूर्तिपूजा को स्वीकार किया **रामरूप** को लोक रक्षक के रूप में उभारा **रामानन्द** के अनुसार "राम दशरत–सूत नंदन है जो जगत में लीलावतार के लिए जन्म लेते हैं। और सत्यता की स्थापना करते हैं।

इस समय जन संस्कृति के उत्थान की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी थी। **भक्ति** के सर्वशाही वास्तविक स्वरूप के साथ लोक जागरण का सूत्रपात महान संत जनसंस्कृति के उनायक "श्रीरामानन्द" जी हुए जो कालान्तर में परब्रह्म परमेश्वर **"श्रीराम"** के अवतार के रूप में लोक श्रद्धा के आवलम्बन बनें। जिन्होंने **राम** की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कर जनमानस को उसकी और आकर्षित किया। और कहा कि भक्ति के द्वारा ही भगवान की शरणागति प्राप्त की जा सकती है वही जगपालक है जगकर्ता है वो परम परमेश्वर **श्रीराम** है। अतः हम सबको उसकी शरण में जाना चाहिए।

मध्ययुगीन काल में रामानन्द जी मेरूदण्ड कहे जा सकते हैं और इसका विशेष कारण यह भी है कि इन्होंने उत्तरी भारत में **भक्ति आन्दोलन** का नेतृत्व किया था।

रामानन्द जी ने भक्ति सिद्धान्तों को नए–नए प्रयोगों, विचारों–विमर्श के साथ उत्तर भारत में प्रतिस्थापित किया। यही भक्ति मार्ग भारत की संस्कृति का मार्ग बना।

इसके सम्बन्ध में कहा **युसुफ हुसैन का मत है कि "मध्यकालीन भारत का भक्ति आंदोलन हिन्दू समाज पर इस्लामी संस्कृति और विचारों के प्रभावी अतिक्रमण का प्रथम संकेत देता है।"**

रामानन्द और राजनीति – रामानन्द जी का काल राजनीतिक दृष्टि से कुछ खास नहीं था। जहाँ मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार समाज को अंधेरे की तरफ ले के जा रहा था वही समाज की राजनीतिक स्थिति खत्म हो चुकी थी। लोग बलवत धर्म परिवर्तन कर रहे थे। अनेकों कुंठित मनोवृत्तियों का शिकार समाज हो चुका था। इस्लामी प्रभाव इस कदर भारत में छा गया था कि उस अंधेरे को समाप्त करने के लिए एक दिव्य अनुभूति की आवश्यकता थी। कहा जाता है कि जब अधंकार

अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है तो उसे समाप्त करने के लिए एक किरण ही काफी होती है। वही किरण का काम स्वयं **रामानन्द** जी कर रहे थे।

इस्लाम राजनीतिक दृष्टि से इतना समृद्ध था कि हिन्दू जनता उसे बाहर निकलने में असमर्थ थी। जनता की चिन्तवृत्तियों पर छायें अंधकार को समाप्त करने के लिए आशा की किरण प्रज्जवलित रामानन्द जी स्वयं कर रहे थे और इनका साथ दिया अनेक संतों ने। मध्यकालीन भारत इस्लाम से त्रस्त था इनके नियमों में बंधा था सत्ता का एकाधिकार था और रामानन्द जी के पास इससे बाहर निकलने का एक मात्र सहारा भक्ति थी। जिसके माध्यम से वे बखूबी बाहर निकाल पाये समाज को और उनके दलित बुराईयों को भी समाप्त करने का प्रयत्न किया जो समाज को आडम्बरों से मुक्त कर रही थी।

उपसंहार – मध्यकालीन भारत की यथास्थिति के अनुसार देखा जाए तो समाज राजनीतिक दृष्टि से इतना मजबूत था कि भारतीय जनता इस्लामी राजनीति से लड़ने में असमर्थ थी। इसका कारण था हमारी राजनीतिक स्थिति कमजोर होना, परिस्थितियों से निपटने में असहयोग की भावना, आपसी कलह, षड़यन्त्रों का जाल, राज्य हड़पने की इच्छा, स्वयं को सर्वोपरि समझ राज्य संचालन का लालच, समाज के प्रति रूखापन, प्रजा के प्रति निरकुंशता, सामाजिक स्थिति कमजोर होना साथ ही आर्थिक स्थिति भी आपसी विश्वास की कमी आदि ऐसे कारण इस्लाम थे जिनका समाधान कहीं नहीं था जिसके कारण इस्लाम भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में कामयाब रहा और समाज उस अंधेरे की तरफ चल पड़ा जहाँ से बाहर आना उसके लिए मुश्किल था।

समाज विभिन्न वर्गो में विभक्त हो चुका था कोई किसी पर विश्वास नहीं करता था सब एक–दूसरे को शक की दृष्टि से देख मौका परस्त हो चुके थे। यही कारण रहा कि मध्य भारत जहाँ सोने की चिड़िया था वो आज अंधकार मयी काल में गुम हो चुका था। जहाँ उस पर अन्य जातियाँ निवास कर रही थी।
इसी यथास्थिति से निपटने के लिए स्वयं विष्णु के अवतार श्री रामानन्द जी हुए जिन्होंने समाज की स्थिति को देखा, समझा व इसके समाधान का कारण ढूंढा जिससे समाज में वापस से आशा, विश्वास, जीने की चाह भर सके, नये समाज का निर्माण हो उसके लिए सबको **राम** की शरण में जाने को कहा जहाँ केवल दुखों से मुक्ति है और वो परमपरमेश्वर दुखों का नाश करने वाला है। सभी को सुख देने वाला मुक्ति दाता है का महत्व समझा समाज को राजनीति की दलदल से बाहर निकाला।

समाज एक विश्वास है और इस विश्वास का कारण स्वयं **ब्रह्म** है। वह **जड़, चेतन, प्रकृति** है। सभी जगह निवास करता है। उसके लिए केवल मन की भक्ति की आवश्यकता है वह स्वयं तुमको दुखों से मुक्त करने वाला है। कहकर समाज को एक नई रोशनी दी।

अतः कहा जा सकता है कि रामानंद और राजनीति का गहरा सम्बन्ध है जो काल विशेष के संदर्भ में सटीक ठहरती है।

सन्दर्भ ग्रंथ –

(1) पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास

(2) प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – के.सी. श्रीवास्तव

(3) मध्यकालीन भारत – डॉ. बी.डी. महाजन

(4) मध्यकालीन भारत का वृहत इतिहास – जे.एल. मेहता

(5) हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल